



डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

प्रतिष्ठित प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिक रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार एवं डी आर डी ओ के महानिदेशक नियुक्त

देश के प्रतिष्ठित प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिक, पद्मश्री डॉ वी के सारस्वत, जो कि विविध मिसाइल कार्यक्रमों के विकास के साथ जुड़े रहे हैं, जैसे कि डेविल, पृथ्वी I, पृथ्वी II, धनुष, ऐन्टी बेलिस्टिक मिसाइल प्रणाली, आदि, 01 सितम्बर, 2009 से रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार एवं डी आर डी ओ के महानिदेशक नियुक्त किए गए हैं। डॉ सारस्वत ने जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से यांत्रिक अभियांत्रिकी में स्नातक, भारतीय विज्ञान संस्थान (आई आई एस), बेंगलूर से यांत्रिक अभियांत्रिकी से अभियांत्रिकी स्नातकोत्तर एवं ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से प्रणोदक अभियांत्रिकी में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। उन्हें प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी, रॉकेट प्रणोदक एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन में विशेषज्ञता हासिल है।



डॉ वी के सारस्वत

इस अंक में

- प्रतिष्ठित प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिक रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार एवं डी आर डी ओ के महानिदेशक नियुक्त
- प्रथम एन बी सी रेकी वाहन की रवानगी
- वांतरिक्ष प्रौद्योगिकी केन्द्र का उद्घाटन
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं के तकनीकी सूचना केन्द्रों / तकनीकी सूचना संसाधन केन्द्रों के प्रमुखों की बैठक
- इरगोनोमिक्स में क्षेत्रीय/अनुसंधान मैथडोलॉजीज पर प्रशिक्षण कार्यक्रम
- 17वां प्रोफेसर डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान
- समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर
- उत्थापन दिवस समारोह
- कार्मिक समाचार
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

डॉ सारस्वत जुलाई 1972 में डी आर डी ओ की प्रयोगशाला रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद में सम्मिलित हुए, यहां आपने प्रथम भारतीय द्रव्य प्रणोदन इंजन, डेविल के विकास कार्य में काम किया। आपने प्रक्षेपास्त्र अनुप्रयोगों के लिए अभिकल्पन, उत्पादन एवं इंजन के परीक्षण व आर सी एस प्रौद्योगिकी की सुविधाओं को स्थापित किया। परियोजना निदेशक के तौर पर उन्होंने पहली देशज 150 किलोमीटर दायरे वाली सतह से सतह प्रक्षेपास्त्र प्रणाली पृथ्वी I एवं 250 किलोमीटर दायरे में मार करने वाली प्रक्षेपास्त्र प्रणाली पृथ्वी II के अभिकल्पन, विकास उत्पादन एवं अधिष्ठापन का कार्य सशस्त्र सेनाओं के लिए किया।

नौसैनिक अनुप्रयोगों हेतु पृथ्वी प्रक्षेपास्त्र का अभिरूप धनुष प्रक्षेपास्त्र जो कि 350 किलोमीटर तक मार करने में सक्षम है, तथा इसे जहाज से दागा जा सकता है, उच्च सीमावर्ती परिशुद्धता के साथ सामरिक प्रयोगों के लिए इसे विकसित किया गया है। पृथ्वी प्रक्षेपास्त्र को सामरिक सैन्य कमांड के साथ, तीनों सशस्त्र सेनाओं के शस्त्रागार में गौरवपूर्ण स्थान हासिल हुआ है।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद के निदेशक के तौर पर, 2001-2005 के दौरान, डॉ सारस्वत ने अनेक प्रौद्योगिकियों के निर्माण के लिए सुविधाओं को परिकल्पित एवं स्थापित किया। इनमें

शामिल हैं:—रिंग लेजर गाएरो (आर एल जी), फाइबर ऑप्टिक गाएरो (एफ ओ जी) पर आधारित इनरशियल नेविगेशन सिस्टम, इलेक्ट्रोमेकैनिक्ल एक्चुएटर्स (ई एम ए), इलैक्ट्रो हाइड्रोलिक एक्चुएटर्स, माइक्रो इलेक्ट्रो मेकैनिक्ल सिस्टम (एम ई एम एस) पर आधारित सेंसर, प्रक्षेपास्त्र मार्गनिर्देशन एवं कंट्रोल के लिए नेविगेशन प्रणाली के अंशशोधन हेतु रेट टेबिल/दर तालिकाएं। भविष्यत् वैमानिकी के लिए उन्होंने माइक्रो एवं नैनो सेंसर के विकास की सुविधाएं परिकल्पित एवं स्थापित कीं। इन सभी प्रौद्योगिकियों की उपलब्धता को विकसित देशों के अंतर्गत प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एम टी सी आर) द्वारा प्रतिबंधित किया गया है। स्वदेशीकरण के जरिए रक्षा प्रौद्योगिकियों में आत्मनिर्भरता के आदर्श के साथ उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों एवं उद्योगों के साथ कई जटिल प्रौद्योगिकियों की उत्पादन सुविधा को स्थापित किया है।

डॉ सारस्वत ने 01 नवम्बर, 2005 को डी आर डी ओ मुख्यालय में कार्यक्रम निदेशक, वायु प्रतिरक्षा के साथ ही सी सी आर एण्ड डी (एम एस एस) का प्रभार भी ग्रहण किया। उन्होंने विशेष शस्त्र प्रणालियों के लिए सामरिक कार्यक्रम में उच्च स्तरीय वास्तुकार की भूमिका निभाई है। आपके दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ, एक बहु-आयामी, सुरक्षित, सामरिक संचार नेटवर्क को रेकार्ड समय से मूर्तरूप देकर परिचालित किया गया। आपके द्वारा परिकल्पित प्रणाली सफलतापूर्वक अभिकल्पित, मूल्यांकित एवं परिचालित की गई है।

कार्यक्रम निदेशक, वायु प्रतिरक्षा के तौर पर आपने एक चुनौतीपूर्ण, भविष्यत् वायु रक्षा कार्यक्रम आरम्भ किया जिसमें आपने कॉम्प्लैक्स एंटी-बैलिस्टिक प्रक्षेपास्त्र प्रणाली एवं जटिल प्रौद्योगिकियां जैसे रडार, सी 4 आई प्रणालियों एवं युद्ध प्रबंधन संसाधनों के समेकन को एक राष्ट्रीय प्राधिकरण का रूप दिया। आपने प्रतिरक्षा प्रणालियों की परिकल्पना तथा राष्ट्रीय वायु प्रतिरक्षा अवयवों के समेकन कार्यों का नेतृत्व किया। देशज इंटरसेप्टर एवं विविध देशज रूप से विकसित ग्राउंड सिस्टम एलीमेंट्स का प्रयोग करके उन्होंने दुश्मनों से आने वाले बैलिस्टिक प्रक्षेपास्त्र को रोकने का प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन नवम्बर, 2006 तथा मार्च 2009 में बाह्य वायुमंडल क्षेत्रों में एवं दिसम्बर, 2007 में आंतरिक वायुमंडल क्षेत्रों में किया गया। इससे राष्ट्र गौरवान्वित हुआ है और बैलिस्टिक प्रक्षेपास्त्र प्रतिरक्षा के क्षेत्र में भारत को विश्व के अग्रणी देशों में ला खड़ा किया है।

डॉ सारस्वत को भारत सरकार द्वारा वर्ष 1998 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वे अंतर्राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी, रूस के सदस्य चुने गए हैं। आपको राष्ट्रीय स्तर के कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें शामिल हैं भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी (आई एन ए ई) का **प्रो जय कृष्ण स्मृति पुरस्कार 2009** एवं वर्ष 2006 का वन इण्डिया वन पीपुल द्वारा दिया गया **आउटस्टैंडिंग इण्डियन एवार्ड**। वे डी आर डी ओ के लगभग सभी शीर्ष स्तरीय पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता रहे हैं जैसे कि प्रौद्योगिकी नेतृत्व पुरस्कार (2007) **नवीन शोध एवं उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास सम्मान (2006)**, **उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन पुरस्कार (1998)**, **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पुरस्कार (1996)** एवं **वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार (1987)**। इसके अतिरिक्त उन्हें विभिन्न व्यवसायिक संस्थानों/निकायों द्वारा भी सम्मानित किया गया है। व्यावसायिक मान्यता के तौर पर आपको सरदार वल्लभभाई पटेल नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, सूरज द्वारा डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। आप कई व्यवसायिक संस्थानों के सदस्य हैं।

डॉ सारस्वत ने नए प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम आरम्भ करने में अहम भूमिका निभाई है, जैसे नौसेना एवं वायु सेना के लिए क्रमशः सहयोगी प्रणाली में, लम्बी दूरी के सतह से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र (एल आर ए एम) एवं मध्यम दूरी के सतह से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र (एम आर एस ए एम), जो कि देश को सामरिक वायु प्रतिरक्षा उपलब्ध कराने के लिए है। इसके अतिरिक्त लम्बी दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र अग्नि V (5000 किमी दूरी) के लिए एक कार्यक्रम आरम्भ किया गया है। आपने स्क्रेमजेट प्रणोदन में अपने शोध द्वारा हाइपरसोनिक परीक्षण वाहन को परिकल्पित किया।

डी आर डी ओ के लिए उनकी संकल्पना में शामिल है—अकादमिक एवं राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के सहयोग से डी आर डी ओ को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरक्षा प्रौद्योगिकियों के लिए एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में विकसित करना, सशस्त्र सेनाओं के प्रयोग को तैयार हथियार प्रणालियों को उद्योगों के सहयोग से विकसित एवं उत्पादित करना, अंतरिक्ष सुरक्षा एवं अंतरिक्ष नियंत्रण के लिए प्रतिरक्षा प्रौद्योगिकी एवं प्रणाली का विकास, नई परिकल्पना पर आधारित शस्त्र—मार्गदर्शित ऊर्जा, गतिकीय ऊर्जा, मानवरोधी शस्त्रों का विकास एवं निम्न स्तर के युद्ध के लिए प्रौद्योगिकी एवं उत्पादों का विकास।

प्रथम एन बी सी रेकी वाहन की रवानगी

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर में दिनांक 27 जून 2009 को आयोजित समारोह में प्रथम एन बी सी रेकी वाहन को लेफ्टिनेंट जनरल गौतम दत्त, विशिष्ट सेवा मेडल, इंजीनियर इन चीफ, सेना मुख्यालय ने झंडी दिखाकर रवाना किया। श्री एम नटराजन, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, महानिदेशक, अनुसंधान तथा विकास, डी आर डी ओ, डॉ दीपांकर बैनर्जी, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं सामग्री विज्ञान), लेफ्टिनेंट जनरल ए एम वर्मा, जी ओ सी 12 कोर, महानिदेशक, आयुध फैक्टरी, मेदक एवं बी ई एल, पुणे, डी आर डी ओ मुख्यालय के निदेशक एवं प्रतिभागी प्रयोगशालाओं के निदेशक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक भी उपस्थित थे।

डॉ दीपांकर बैनर्जी, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं सामग्री विज्ञान), ने लेफ्टिनेंट जनरल गौतम दत्त को इस वाहन की चाबी प्रदान की। इस वाहन के विकास के लिए रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर नोडल एजेंसी थी। सेना द्वारा आठ एन बी सी रेकी वाहनों के सीमित उत्पादन का आदेश दिया गया है जिस पर डी आर डी ओ, आयुध फैक्टरी, मेदक तथा बी ई एल, पुणे ने निजी क्षेत्र के सहयोग से इसका उत्पादन किया है।



लेफ्टिनेंट जनरल गौतम दत्त को वाहन की चाबी सौंपते हुए डॉ दीपांकर बैनर्जी। साथ में श्री एम नटराजन, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार तथा डॉ नरेन्द्र कुमार, निदेशक, डी एल (दायें)।



एन बी सी रेकी वाहन।

वांतरिक्ष प्रौद्योगिकी केन्द्र का उद्घाटन

श्री एम नटराजन, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, ने 03 अगस्त 2009 को संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई में वांतरिक्ष प्रौद्योगिकी केन्द्र का उद्घाटन किया। इस केन्द्र में वायुयान परियोजनाओं के लिए एयरक्राफ्ट माउंटिड एसेसरी गियर बॉक्स, हाइड्रोलिक फिल्टर्स, पॉवर-टेक-अप शॉफ्ट, एयरक्राफ्ट बीयरिंग एवं 5 किलोवाट परमानेंट मेग्नेट ब्रशलेस डी सी जनरेटर इत्यादि सुविधाएं उपलब्ध हैं।

श्री एस सुंदरेश, निदेशक, सी वी आर डी ई ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। सी वी आर डी ई के अधिकारी/कर्मचारी, डी आर डी ओ मुख्यालय एवं सम्बद्ध प्रयोगशालाओं ने समारोह में भाग लिया।



उद्घाटन समारोह के अवसर पर उपस्थित श्री एस सुंदरेश, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, सी वी आर डी ई, श्री एम नटराजन, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, तथा श्री अजय सिंह, सी सी ई निर्माण।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं के तकनीकी सूचना केन्द्रों / तकनीकी सूचना संसाधन केन्द्रों के प्रमुखों की बैठक

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली द्वारा दिनांक 29 जुलाई 2009 को डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं के तकनीकी सूचना केन्द्रों / तकनीकी सूचना संसाधन केन्द्रों के प्रमुखों की बैठक का आयोजन किया गया। डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक ने मुख्य अतिथि डॉ दीपांकर बैनर्जी, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं सामग्री विज्ञान), डॉ आर श्रीहरि राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान), माननीय अतिथि, श्री एम आर केशोरे,



तकनीकी सूचना केन्द्रों / तकनीकी सूचना संसाधन केन्द्रों के प्रमुखों की बैठक के अवसर पर उपस्थित श्री एस सी सक्सेना, डॉ आर श्रीहरि राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान), डॉ दीपांकर बैनर्जी, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं सामग्री विज्ञान), डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक। साथ ही इनसेट में डॉ दीपांकर बैनर्जी, उद्घाटन उद्बोधन देते हुए।

सह निदेशक, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलूरु तथा विभिन्न डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं के तकनीकी सूचना केन्द्रों / तकनीकी सूचना संसाधन केन्द्रों के प्रमुखों का स्वागत किया।

डॉ दीपांकर बैनर्जी, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं सामग्री विज्ञान), ने बैठक का उद्घाटन किया तथा उद्घाटन सम्बोधन दिया। डॉ बैनर्जी ने पुस्तकालय विज्ञान एवं पुस्तकालय विज्ञान के पांच महत्वपूर्ण नियम के जनक, डॉ एस आर रंगनाथन के योगदानों का प्रकाश डाला। आपने पुस्तकालय सूचना विज्ञान विशेषज्ञों को तकनीकी सूचना केन्द्रों को ज्ञान केन्द्र में बदलने का अनुरोध किया।

डॉ आर श्रीहरि राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान), डी आर डी ओ मुख्यालय, ने एक विशेष व्याख्यान दिया तथा संस्थागत कोष, डिजिटल पुस्तकालय एवं समसामयिक पत्रिकाओं की सूची इत्यादि की महत्ता बतायी। अपने व्याख्यान के दौरान आपने डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ अनुसंधान समुदाय को दिए जा रहे उत्कृष्ट योगदानों की प्रशंसा की। आपने इंटरनेट / इंटरनेट पर कागजमुक्त पुस्तकालयों की महत्ता तथा नवीनतम प्रौद्योगिकियों पर संसाधनों की पहुंच पर भी बल दिया। बैठक का आयोजन डी आर डी ओ ई जर्नल सेवा तथा डी आर डी ओ पुस्तकालय नियमावली एवं अभ्यास नामक दो तकनीकी सत्रों में किया गया।

डॉ आर श्रीहरि राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान), ने प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। श्री ए बालावर्धनराव, वैज्ञानिक एफ, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद इसके रैपोटियर थे। श्री एस सी सक्सेना, संयोजक, ने डी आर डी ओ ई जर्नल सेवा के अद्यतन स्तर के विषय तथा इनके प्रयोगात्मक विश्लेषण के बारे में बताया। अध्यक्ष ने प्रतिभागियों से अपनी उपयोक्ता प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में इन सेवाओं का प्रचार-प्रसार करने का अनुरोध किया। इस सत्र में क्षेत्रीय प्रतिनिधियों द्वारा पांच प्रस्तुतियां दी गईं। डॉ अरुणा, वैज्ञानिक एफ, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), ने बेंगलूरु क्षेत्र की ओर से ई जर्नल सेवाओं के विषय में अपनी प्रस्तुति दी। डॉ अरुणा ने ई जर्नल को तीन भागों में विभाजित किया। यह प्रस्तुति बेंगलूरु स्थित प्रयोगशालाओं से एकत्रित की गई जानकारी पर आधारित थी। डॉ नागेश्वर राव, वैज्ञानिक ई, रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), ने हैदराबाद क्षेत्र की ओर

से अपनी प्रस्तुति दी। श्रीमती एस एस अवाचत, वैज्ञानिक एफ, आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), ने पुणे क्षेत्र की ओर से तथा डॉ राजीव विज ने उत्तर क्षेत्र प्रयोगशालाओं की ओर से अपनी प्रस्तुति दी।

श्री एम आर केशोरे, सह-निदेशक, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु ने डी आर डी ओ पुस्तकालय नियमावली एवं अभ्यास नामक द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। श्री आर एस राठौर, वैज्ञानिक एफ, रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर इसके रैपोटियर थे। श्री केशोरे ने पुस्तकालय सूचना विज्ञान विशेषज्ञों एवं उनके द्वारा डी आर डी ओ समुदाय को चल रही परियोजनाओं एवं उनके समय पर सफलतापूर्वक सम्पूर्ण होने के लिए दी जा रही मूल्यवान सेवाओं की प्रशंसा की।

डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक ने डी आर डी ओ संस्थागत कोष की स्थापना की महत्ता बताई जिसके द्वारा विश्व को संगठन के बौद्धिक कार्य को दिखाया जाएगा। आपने डेसीडॉक द्वारा विकसित ई-लर्निंग पोर्टल का भी वर्णन किया। आपने तकनीकी सूचना संसाधन केन्द्रों के प्रमुखों से अपनी प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में अनुवर्ती शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित पाठ्यक्रम सामग्री इकट्ठा कर अपलोडिंग हेतु डेसीडॉक को भेजने के लिए कहा। श्री योगेश मोदी, वैज्ञानिक बी, डेसीडॉक, ने डेसीडॉक द्वारा विकसित विभिन्न मॉड्यूलज एवं सुविधाओं पर प्रस्तुति दी, जिन्हें अपलोडिंग, त्रुटि निवारण, प्रयोगशाला के आंकड़ों का संपादन, डी आर डी ओ समसामयिक पत्रिकाओं की सूची का डेटाबेस बनाने के लिए विकसित किया गया है।

बैठक का समापन श्री एस सी सक्सेना, संयोजक के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

इरगोनोमिक्स में क्षेत्रीय अनुसंधान मैथडोलॉजीज पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली ने ए एन जी आर कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद के अनुरोध पर विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में कार्यरत महिला वैज्ञानिकों के लिए दिनांक 20-24 जुलाई 2009 के दौरान इरगोनोमिक्स में क्षेत्रीय अनुसंधान मैथडोलॉजीज पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्मिकों की सुरक्षा एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए निम्नतर लागत महिला कृषि एवं ठेकेदारी प्रौद्योगिकियों के अभिकल्पन, विकास एवं प्रसार में लगे 18 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया।

इस कार्यक्रम में इरगोनोमिक्स से संबंधित एंथ्रोपोमेट्री, पोस्चर का मूल्यांकन, गुरुत्वाकर्षण केन्द्र, मस्क्यूलोस्केलेटल डिस्ऑर्डर, ऐरोबिक तथा एनऐरोबिक



प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक दृश्य।

ऑक्सीजन आहरण, उर्जा खपत, हृदय दबाव तथा मानसिक कार्यभार नामक विषयों को शामिल किया गया।

डॉ जी इलावझागन, निदेशक, रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ मानस कुमार मंडल, निदेशक, डी आई पी आर ने मुख्य सम्बोधन दिया। प्रोफेसर पी धारा, शरीरविज्ञान विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर, डॉ दीपक शरन, पुनर्वास केन्द्र, बैंगलूरु तथा डॉ ए के गांगुली, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मॉडल केन्द्र, भेल, तिरुचिरापल्ली तथा डी आर डी ओ के वैज्ञानिक संकाय सदस्य थे। डॉ कृष्णा श्रीनाथ, निदेशक, ए आई सी आर पी ने टैक्नोलॉजी इंटरवेंशन एंड इवेल्यूएशन ऑन जेंडर इन एग्रीकल्चर : रिसर्च एंड मैथोडोलोजिकल इश्यूज पर समापन सम्बोधन दिया। डॉ एस मजुमदार, अपर निदेशक, डिपास, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

17वां प्रोफेसर डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ने दिनांक 26 जून 2009 को 17वें प्रोफेसर डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया। प्रोफेसर के एल चोपड़ा, पूर्व निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़गपुर ने सूर्य से बिजली पर अपना व्याख्यान दिया। श्री एम नटराजन, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार एवं महानिदेशक, अनुसंधान तथा विकास, डी आर डी ओ, ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ दीपांकर बैनर्जी, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं सामग्री विज्ञान), प्रोफेसर के एल चोपड़ा, रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर के तीन पूर्व निदेशक तथा डी आर डी ओ मुख्यालय एवं प्रयोगशालाओं के निदेशक उपस्थित थे। जोधपुर के विभिन्न अकादमिक एवं अनुसंधान संस्थानों के संकाय सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

डॉ नरेन्द्र कुमार, निदेशक, रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ने मुख्य अतिथि प्रोफेसर के एल चोपड़ा एवं श्री एम नटराजन, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार का स्वागत किया। डॉ बैनर्जी ने अपने सम्बोधन में प्रोफेसर कोठारी की विशेषताओं तथा विज्ञान, शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों से जुड़े व्यक्तियों पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि डॉ कोठारी भारत में रक्षा विज्ञान के वास्तुकार थे।

प्रोफेसर के एल चोपड़ा, जो कि प्रोफेसर डी एस कोठारी के छात्र रहे हैं, ने अपने व्याख्यान का शुभारम्भ उन अध्यापकों को याद करते हुए किया जो बड़ी मुश्किल से मिलते हैं और वे न केवल विद्यार्थियों को पढ़ाते थे बल्कि उनको सीखने के लिए प्रेरित भी करते थे। आपने बताया कि स्वर्गीय प्रोफेसर दौलत सिंह कोठारी इस अद्भुत श्रेणी में आते थे। प्रोफेसर चोपड़ा ने अपने व्याख्यान को प्रोफेसर कोठारी को जो कि एक महान अध्यापक, विवेचक एवं वैज्ञानिक ज्ञान के दार्शनिक थे, को समर्पित किया। श्री पी के भटनागर, वैज्ञानिक जी, अध्यक्ष, 17वां प्रोफेसर डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान आयोजन समिति, ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।



डॉ दीपांकर बैनर्जी, व्याख्यान देते हुए।

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान, दिल्ली

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली ने ईसा स्वर्ण जयंती समारोह के एक भाग के रूप में व्याख्यान आयोजित किए। दिनांक 02 जुलाई 2009 को **सम्पूर्ण गुणयुक्त व्यक्ति** पर डॉ रामानन, निदेशक, राष्ट्रीय प्रशिक्षण एवं विकास अकादमी, दिल्ली द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया। आपने अपने व्याख्यान के शुभारम्भ में मानव की चार मूल आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला, जो हैं, शारीरिक, सामाजिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक। शारीरिक में शामिल हैं, भोजन, आवास, कपड़ा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक रूप से मजबूती। सामाजिक आवश्यकताओं में शामिल हैं, अन्य लोग, संबंधी, जिसे आप प्यार करें और जो आप को प्यार करें। आपने बताया कि समेकित व्यक्तित्व विकास के लिए चार आयाम हैं, शारीरिक, दिमागी, भावनाएं एवं आध्यात्मिक। आपने आगे कहा कि शुद्ध मस्तिष्क में ही अच्छे विचार एवं अच्छे परिणाम आते हैं जबकि अशुद्ध मस्तिष्क में अशुद्ध विचार एवं शंका परिणाम आते हैं। डॉ रामानन ने सम्पूर्ण गुणवत्ता व्यक्ति की अवधारणा एवं उत्पादकता में बढ़ोत्तरी हेतु मॉडलों पर चर्चा की। आपने प्रभावी संचारकर्ता बनने हेतु शारीरिक मुद्रा, मुस्कुराहट, सही दृष्टिकोण, तथा स्पष्टता पर जोर दिया। आपने



डॉ रामानन का परिचय कराते हुए निदेशक, ईसा।

पूर्ण गुणयुक्त व्यक्ति के दस गुणों को बताया – सत्यनिष्ठ, उत्कृष्ट सामाजिक, नेतृत्वशील, उर्जावान, व्यवहार कुशल, व्यक्तिगत उद्देश्य सहित, संतोषी तथा सफल। आपका व्याख्यान प्रकाश पुंज की भांति था। इससे सभी वैज्ञानिकों को प्रेरणा मिली तथा सभी ने इसे सराहा। निदेशक, ईसा ने भी इस अवसर पर व्याख्यान दिया।

इस श्रृंखला के अंतर्गत अन्य व्याख्यान 08 जुलाई 2009 को डॉ कोटा हरिनारायण, विशिष्ट प्रोफेसर, एन ए एल तथा राजा रमन्ना अध्यक्षता तथा पूर्व कार्यक्रम निदेशक, एल सी ए ने वायुयान प्रौद्योगिकियों में विकास विषय पर दिया। डॉ कोटा हरिनारायण ने बताया कि बीसवीं सदी में वैमानिकी एक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकीय विकास के रूप में उभरा है। आपने सक्षम वायु मारक क्षमता को युद्ध जीतने के लिए आवश्यक बताया। आपने एल सी ए कार्यक्रम के बहुमुखी रूप से परिचित कराते हुए एयरफ्रेम ढांचे, प्रणोदन, वैमानिकी, शस्त्रीकरण, उड़ान नियंत्रण, अभिकल्पन, प्रारूपण, तथा वायुगतिकीय पर प्रकाश डाला। आपने एल सी ए कार्यक्रम के दौरान आने वाली चुनौतियों का जिक्र करते हुए लड़ाकु वाहनों की पीढ़ियों, नामत् सबसोनिक, ट्रांससोनिक, सुपरसोनिक, बाई-सोनिक तथा ट्राईसोनिक की चंचलता तथा सुदृढ़ता के बारे में भी बताया। डॉ कोटा हरिनारायण ने एल सी ए के गुणों पर प्रकाश डालते हुए अनेक आयामों के विषय पर जानकारी दी, जिनमें शामिल थे, टेललैस डेल्टा विद कम्पाउंड स्वीप, उच्च स्थितीकीय अस्थिरता, क्वाड-रिडेन्डेंट डिजिटल फ्लाइ-बाई-वायर, सम्मिश्रित एयरफ्रेम, ग्लास कोकपिट, माइक्रोप्रोसेसर-आधारित उपयोगी प्रणाली प्रबंधन, नियत ज्यामितीय वायु आहरण, निम्न विंग लोडिंग तथा एकल आप्टरबर्निंग टर्बोफैन। एल सी ए प्रौद्योगिकीय में डयूल रिडेन्डेंट प्रोसेसर-आधारित यू एस एम एस, जीरो-जीरो इंजेक्शन सीट, उन्नत वैमानिकी, ग्लास कोकपिट, उन्नत पदार्थ क्वाड डिजिटल एफ सी एस तथा उच्च क्षमता इंजन। इन प्रौद्योगिकियों से वायुयान की विश्वसनीयता बढ़ती है। आपने रखरखाव के तौर तरीकों पर भी प्रकाश डाला। आपने एल सी ए के ग्लास कोकपिट की स्वीडिश हल्के वायुयान ग्रीयन से तुलना की। आपने पर्यावरण नियंत्रण प्रणाली, हाइड्रोलिक प्रणाली, द्वितीयक उर्जा प्रणाली, ब्रेक प्रबंधन प्रणाली तथा नोज व्हील स्टीयरिंग प्रणाली, परीक्षण तथा समेकन प्रणाली, तड़ित परीक्षण सुविधा, आयरन बर्ड सुविधा की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। आपने एल सी ए की भविष्यत् संभावित परियोजनाओं पर प्रकाश डालते हुए अपना व्याख्यान समाप्त किया।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



रोहिणी रडार

भारतीय वायु सेना ने 30 रोहिणी रडार की आपूर्ति के लिए बी ई एल के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इन रडारों का मूल्य 2001 करोड़ रुपये है। यह आदेश पूर्व में दिए गए 07 रोहिणी रडारों के अतिरिक्त है, जिनका मूल्य 275 करोड़ रुपये है। यह रडार इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बैंगलूरु का बी ई एल के साथ उद्योग साझेदार के अंतर्गत विकसित स्वदेशी 3-डी निगरानी रडार विकास की सफलता की कहानी का एक ज्वलंत उदाहरण है।

उत्थापन दिवस समारोह

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र, दिल्ली

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली ने 01 अगस्त 2009 को जोश और उत्साह के साथ अपना 39वां उत्थापन दिवस मनाया। इस अवसर पर डॉ डब्ल्यू सेल्वामूर्ति, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (जैव विज्ञान एवं मानव संसाधन) मुख्य अतिथि थे। डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। डॉ सेल्वामूर्ति ने डेसीडॉक के कार्यों की प्रशंसा की तथा प्रकाशनों, ई-जर्नल ज्ञान सुविधा इत्यादि की गुणवत्ता पर संतुष्टि प्रकट की।

आपने प्रलेखन सेवाओं हेतु आधुनिक ढांचागत सुविधाओं की आवश्यकता पर बल दिया। आपने कहा कि डेसीडॉक को सभी महत्वपूर्ण परियोजनाओं का कोष बनाना चाहिए। दिल्ली स्थित प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं एवं डी आर डी ओ मुख्यालय के निदेशालयों के निदेशक, डेसीडॉक के भूतपूर्व निदेशक, एवं भूतपूर्व कार्मिक इस अवसर पर उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने प्रयोगशाला स्तर पुरस्कार, 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कार्मिकों को स्मृति चिह्न, खेल गतिविधियों एवं सांस्कृतिक प्रतिस्पर्धाओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ने 27 जून 2009 को अपना 50वां उत्थापन दिवस मनाया। श्री एम नटराजन, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार एवं महानिदेशक, अनुसंधान तथा विकास, डी आर डी ओ, ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ दीपांकर बैनर्जी, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (वैमानिकी एवं सामग्री विज्ञान), मुख्य अतिथि थे। भूतपूर्व निदेशक, डॉ ए आर रेड्डी, डॉ रामगोपाल एवं श्री आर के स्याल प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं एवं डी आर डी ओ मुख्यालय के निदेशालयों के निदेशक, इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री एम नटराजन ने प्रयोगशाला पुरस्कार प्रदान किए। प्रयोगशाला में कार्यरत एवं भूतपूर्व कार्मिकों को स्वर्ण जयंती स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।



डॉ डब्ल्यू सेल्वामूर्ति, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (जैव विज्ञान एवं मानव संसाधन) दीप प्रज्वलित करते हुए। साथ में हैं, डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक एवं श्री अशोक कुमार, अपर निदेशक, डेसीडॉक।



डेसीडॉक उत्थापन दिवस के अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अन्य साथी प्रयोगशालाओं के निदेशकगण।



डी एल जे स्वर्ण जयंती सार संग्रह के विमोचन का दृश्य।

प्रोन्नतियां

श्री जी इलांगोवन, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (संसाधन एवं प्रबंधन), डी आर डी ओ मुख्यालय, श्री एस सुन्दरेश, निदेशक, संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई एवं डॉ ए शुभनंदा रॉव, निदेशक, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे को 27 अगस्त 2009 को विशिष्ट वैज्ञानिक पदोन्नत किया गया है। इस अंक में डी आर डी ओ में उनके योगदान को रेखांकित करते हुए उनके परिचय परिवृत्त दिए गए हैं।

मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (संसाधन एवं प्रबंधन)



श्री जी इलांगोवन, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (संसाधन एवं प्रबंधन), डी आर डी ओ मुख्यालय ने अपनी विद्युतकीय अभियांत्रिकी में स्नातक उपाधि 1972 में थियागाराजर अभियांत्रिकी महाविद्यालय, मदुरई से एवं एप्लाइड इलेक्ट्रॉनिक्स में स्नातकोत्तर (अभियांत्रिकी) 1974 में पी एस जी प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, कोयम्बटूर से प्राप्त की।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने शासकीय प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, कोयम्बटूर में करीब एक वर्ष तक सह प्रवक्ता के तौर पर कार्य किया। इसके पश्चात वर्ष 1975 में आप ए डी ई बेंगलूर में बतौर कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी जुड़ गए और एवियोनिक्स एवं फ्लाइट सिम्यूलेशन डिवीजन में शामिल हो गए। ए डी ई में अपने 32 वर्षों के कार्यकाल के दौरान उन्होंने प्रणाली आधारित कई परियोजनाएं सफलता से संचालित की। आप कई सिम्युलेटर परियोजनाओं के परियोजना निदेशक रहे, जिसमें शामिल हैं एल सी ए इंजीनियरिंग सिम्युलेटर एवियोनिक्स पार्ट-टास्क ट्रेनर एवं कम्प्यूटराइज्ड पाइलट सेलेक्शन सिस्टम। आपने एक डिजाइन इंजीनियर से टेक्नोलॉजी डिवीजन लीडर, कई सिम्युलेटर परियोजनाओं के लिए सिस्टम डिजाइनर, कार्पोरेट मैनेजर, प्रयोगशाला के निदेशक, और अंततः सी सी आर एण्ड डी, डी आर डी ओ मुख्यालय तक का सफर कठिन मेहनत एवं लगन से पूरा किया।

आप आई ई टी ई के अध्यक्षता हैं। उन्हें चौथे आई ई टी ई-बी वी बालिगा मैमोरियल अवार्ड से वर्ष 2001 में सम्मानित किया गया। लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट के लिए डिजिटल फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम में योगदान के लिए उन्हें डी आर डी ओ पाथब्रेकिंग रिसर्च/आउटस्टैंडिंग टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट अवार्ड-2002 से सम्मानित किया गया। उन्हें कम्प्यूटराइज्ड पाइलट सेलेक्शन सिस्टम के विकास के लिए अग्नि अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस 2005 से सम्मानित किया गया।

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना, चेन्नई



श्री एस सुन्दरेश, निदेशक, संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई को विशिष्ट वैज्ञानिक श्रेणी में नियुक्त किया गया है। उन्हें समाघात वाहन के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी प्रबंधन एवं परियोजना प्रबंधन का खासा अनुभव है। मद्रास विश्वविद्यालय से सन 1971 में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक एवं एन 1973 में आई आई टी मद्रास से कंट्रोल सिस्टम में परास्नातक पूर्ण करने के पश्चात सन 1974 में वे नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम से जुड़ गए। सन 1974 से 1986 तक के अपने एन एस टी एल कार्यकाल में आपने अंतर्जालीय हथियारों के लिए कंट्रोल एण्ड गाइडेंस सिस्टम के डिजाइन एवं विकास पर सफलतापूर्वक कार्य किया एवं एक एंटी-शिप टॉरपेडो के रोल एण्ड कोर्स कंट्रोल एवं गाइडेंस सिस्टम का उत्पादीकरण किया।

वर्ष 1986 में वे सी वी आर डी ई, अवाडी में शामिल हुए, जहां आपको मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन के लिए इंटीग्रेटेड फायर कंट्रोल सिस्टम (आई एफ सी एस) की जिम्मेदानी सौंपी गई। आपने सफल हथियार प्रणाली परीक्षणों एवं उपयोगकर्ता स्वीकृति के जरिए मुख्य युद्धक टैंक एम बी टी अर्जुन के लिए आई-एफ सी एस के विकास का प्रतिनिधि

त्व किया। आपने 1996 में उनके योगदान के लिए डी आर डी ओ टेक्नोलॉजी अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें अपनी टीम का देशज इलैक्ट्रो हाइड्रोलिक गन कंट्रोल सिस्टम, गनरी ट्रेनिंग सिम्यूलेटर एवं युद्ध प्रबंधन प्रणाली के सफलतापूर्वक विकास के लिए मार्गदर्शन किया। उन्होंने वर्ष 1996 से सी वी आर डी ई के एल सी ए वर्क सेंटर का नेतृत्व किया एवं एयरक्राफ्ट माउन्टेड एसिसरी गियर-बॉक्स एवं लाइट काम्बेट एयर क्राफ्ट (एल सी ए) के लिए हाइड्रोलिक फिल्टर की योग्यता में अपनी टीम का सफल नेतृत्व किया। आप सन् 2002 में 'सोलजर सिस्टम स्टडी ग्रुप' के अध्यक्ष नामित किए गए। आपने इस अध्ययन में डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों की एक टीम का मार्गदर्शन किया एवं 'सोलजर एज़ ए सिस्टम' के लिए मल्टी लैब डी आर डी ओ कार्यक्रम का एक प्रस्ताव भी पेश किया।

आपने 01 सितम्बर, 2005 से सी वी आर डी ई, अवाडी के निदेशक का प्रभार संभाला, जब प्रयोगशाला का मुख्य फोकस एम बी टी अर्जुन का उत्पादन था। आपने गुणवत्ता एवं विश्वसनियता के पहलुओं पर ध्यान देते हुए, उसके आरम्भिक उत्पादन के समय में उन्होंने आरम्भिक कठिनाइयों को हल करने की दिशा में नेतृत्व किया। उन्होंने एक्सिलिरेटेड यूजर कम रिलायेबिलिटी ट्रायल्स (ए यू सी आर डी) के जरिए भारतीय सेना में अर्जुन टैंक का आगमन, पहले समूह के दौ टैंक देकर सुनिश्चित किया। मई 2009 में तीसरे समूह के 16 टैंकों के साथ, भारतीय सेना में एम बी टी अर्जुन की पहली रेजीमेंट परिचालित हुई। आपके नेतृत्व में सी आई अजेय एवं बख्तरबंद एम्बुलेंस के उत्पादन ने मूर्तरूप लिया। जी एस क्यू आर के अनुसार एक कैरियर कमांड पोस्ट ट्रेकड व्हीकल विकसित किया गया। 'अनमैन्ड ग्राउन्ड व्हीकल' (यू जी वी) के क्षेत्र में, विभिन्न सेना अनुप्रयोगों को साकार करने के लिए एक प्रोटोटाइप टेलीऑपरेटेड वी एम पी II विकसित किया गया। उन्होंने एम बी टी अर्जुन के लिए कई प्रौद्योगिकियों के विकास में मार्गदर्शन किया जैसे कि छः डिग्री मोशन प्लेटफॉर्म पर ड्राइविंग एवं गनरी सिम्यूलेटर्स, ऑटोमेटिक टारगेट ट्रेकर, मोबाइल कैमोफ्लेज सिस्टम। आपने ऑटोमोटिव व एयरक्रॉफ्ट उप प्रणालियों के लिए आधुनिक आधारभूत सुविधाएं स्थापित कीं।

आपने राष्ट्रीय कार्यशालाओं, सम्मेलनों एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में बड़ी संख्या में तकनीकी पत्र प्रस्तुत किए हैं। आप आई ई टी ई के अध्यक्षता, आई ई ई ई के वरिष्ठ सदस्य, एस ए ई एवं एफ पी एस आई में सदस्य हैं।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे



डॉ ए शुभनंदा राव, निदेशक, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे विशिष्ट वैज्ञानिक नियुक्त किया गया है। सन् 1950 में जन्में डॉ ए शुभनंदा राव, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वारंगल से स्नातक (यांत्रिकी अभियांत्रिकी) के दौरान गोल्ड मेडलिस्ट रहे हैं। उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान (आई आई एस), बेंगलूरु से अपने एम ई (वैमानिकी) के दौरान "रोल ऑफ आनर" प्राप्त करके अपनी शैक्षिक उत्कृष्टता को जारी रखा। आपने ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से अपनी पी एच डी उपाधि प्राप्त की, आपके शोध का विषय था "फ्रेक्चर बिहेवियर ऑफ सॉलिड प्रोपेलेंट रॉकेट मोटर ग्रेन्स"।

आप प्रतिष्ठित प्रणोदक अभिकल्पनकर्ता हैं एवं आपने स्ट्रेटेजिक व टेक्टिकल मिसाइल के लिए तीस से अधिक देशज प्रणोदक प्रणालियां अभिकल्पित, विकसित, कार्यान्वित, उत्पादित एवं मूल्यांकित की हैं। आप देश में विविध क्षमताओं वाले प्रणोदक प्रसंस्करण संयंत्रों, निजी क्षेत्र में प्रमुख प्रणोदक संघटकों एच टी पी बी एवं ए पी की उत्पादन इकाइयों से सम्बद्ध रहे हैं। इससे डी आर डी ओ एवं भारत वर्ष को प्रोपेलेंट उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है। आपने सॉलिड प्रोपेलेंट मोटर के परीक्षण एवं मूल्यांकन के लिए विविध आधारभूत सुविधाएं विकसित की हैं, जिसमें शामिल हैं—फ्लैक्स सील टेस्ट सेटअप, 6 कम्पोनेंट टेस्ट बेड, इन्वायरमेंटल क्वालिफिकेशन सुविधा एवं रॉकेट समायोजन सुविधा सॉलिड प्रोपल्शन इकाइयों के क्रियाशीलता अनुमान के लिए विभिन्न सॉफ्टवेयरों के विकास में वे सक्रिय रहे हैं।

एच ई एम आर एल के निदेशक के तौर पर आपने केस-बॉन्डेड रॉकेट मोटर के लिए कंपोजिट प्रोपेलेंट प्रोसेसिंग इकाई को सफलता से संचालित व सृजित किया। आप उद्योगों में बहुत से उन्नत मुख्य उच्च ऊर्जा पदार्थों जैसे जी ए पी, सी एल 20 की उत्पादनशीलता में सक्रिय रहे हैं। आपके बहुमुखी नेतृत्व में प्रचालन प्रणालियों के लिए जिन प्रणालियों का विकास, परीक्षण एवं आहरण किया गया है, उनमें शामिल हैं – इनरजेटिक सुपरइलास्टिक रॉकेट प्रोपेलेंट, गन एम्युनिशन के लिए मॉड्युलर चार्ज प्रणाली, उच्च ऊर्जा वाले लोवा प्रोपेलेंट, इन्सैस्टिव प्लास्टिक बॉन्डेड

एक्सप्लोसिव फॉर्मूलेशन, एडवान्सड एंटी थर्मल एंटी लेजर स्मोक ग्रेनेड्स, प्रतिरक्षा के लिए उपकरण, फ्यूल एयर एक्सप्लोसिव, टैंक के बचाव के लिए हाइब्रिड आर्मर, नए इंटेन्सिव मॉलीक्यूल्स फॉक्स 7 एवं टी ए टी बी। आपने एक ओर तो सुरक्षा एवं गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए कड़ी प्रबन्धन प्रणाली विकसित की और दूसरी तरफ भण्डारण के लिए समयबद्ध विकास सुनिश्चित किया।

आपको सतह से वायु में मार करने वाली मिसाइल सैम II के विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए गोल्ड शील्ड अवार्ड से सम्मानित किया गया एवं एन आई टी, वारंगल द्वारा प्रतिष्ठित एल्युमनाई अवार्ड से अलंकृत किया गया। इण्डियन काउन्सिल ऑफ मैनेजमेंट एक्सीक्यूटिव्स द्वारा उन्हें समाजश्री से नवाजा गया और उनको उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता देते हुए **डी आर डी ओ द्वारा आपको वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार-2005, डी आर डी ओ स्पिन ऑफ टेक्नोलॉजी अवार्ड-2006 एवं टाइटेनियम ट्राफी-2007** (संस्थापन के प्रमुख के तौर पर) सम्मानित किया गया। आपको ये सभी सम्मान व्यक्तिगत स्तर पर भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए। उन्हें **डी आर डी ओ उत्कृष्ट कार्यनिष्ठादन पुरस्कार-2007** भी प्राप्त है। आपको लगातार दो सालों 2006 एवं 2007 में **पाथ ब्रेकिंग रिसर्च अवार्ड** से सम्मानित किया गया। उन्हें आई आई एस सी, बेंगलूर के **प्रतिष्ठित एल्युमनाई अवार्ड से वर्ष 2008** में सम्मानित किया गया। आप भारतीय उच्च ऊर्जा पदार्थ समिति (एच ई एम एस आई) के प्रधान एवं भारतीय वैमानिकी समिति के पुणे शाखा के अध्यक्ष हैं। वे इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इण्डिया) के फेलो एवं आई एस ए एम पी ई एवं एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इण्डिया के सदस्य हैं। विभिन्न शोध पत्रिकाओं एवं सेमिनार/कांफ्रेंस कार्यवाहियों में उनके 45 तकनीकी प्रकाशन आ चुके हैं। आप राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में सहभागिता एवं सत्रों की अध्यक्षता कर चुके हैं।

वैज्ञानिक एच में पदोन्नति

कुछ डी आर डी ओ वैज्ञानिक 01 जुलाई, 2009 से वैज्ञानिक एच एवं वैज्ञानिक जी में पदोन्नत किए गए। कुछ पदोन्नत वैज्ञानिकों के परिचय परिवृत्त, उनके योगदान के साथ इस अंक में दिए जा रहे हैं। कुछ अन्य वैज्ञानिकों का परिचय डी आर डी ओ न्यूज़लैटर के अगले अंक में दिया जाएगा।

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र, बेंगलूरु



श्री वी एस महालिंगम, निदेशक, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलूरु, कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, गुइन्डी से इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूनिकेशन इंजीनियरिंग में स्नातक डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात डी आर डी ओ में शामिल हुए। आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), कानपुर से एम टेक इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग पूर्ण किया एवं सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में उच्च प्रशिक्षण के लिए इन्डस टेक, पिट्सबर्ग, यू एस ए गए।

श्री वी एस महालिंगम ने भारतीय सेना के लिए सी 3 आई प्रणाली के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है। आप कमान्ड कंट्रोल एवं कम्प्यूनिकेशन सिस्टम में गहरी पैठ रखने वाले विशेषज्ञ हैं। भारतीय सेना के आर्टिलरी कार्यों को स्वसंचालित करने वाली परियोजना 'शक्ति' के अन्तर्गत आर्टिलरी कॉम्बेट कमांड एण्ड कंट्रोल सिस्टम (ए सी सी सी एस) के लिए वे परियोजना टीम के मुख्य सदस्य थे। यह भारतीय सेना की पहली सी 3-आई परियोजना थी। श्री महालिंगम संवाहक परियोजना के अन्तर्गत कमांड इन्फॉर्मेशन डिजीज़न सपोर्ट सिस्टम (सी आई डी एस एस) के विकास के लिए परियोजना समन्वयक (1999-2006) रहे हैं। उन्होंने संवाहक परियोजना का नेतृत्व किया एवं उसके संचालन के लिए एक सशक्त टीम खड़ी की। संवाहक परियोजना भारतीय सेना की अग्रणी सी 3-आई परियोजना थी। उन्होंने खास तौर पर सॉफ्टवेयर विकास के लिए निजी क्षेत्र के आई टी उद्योग को व्यापक रूप से विकास कार्यों में जुटाए रखा। उपयोगकर्ताओं से निकट के संबंध बनाए रखने के साथ ही आप परियोजना की गतिविधियों के विकास के लिए उद्योग एवं शैक्षिक संस्थानों के बहुत से विशेषज्ञों से भी आपका सानिध्य रहा।

आपके विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर कई शोध-पत्र प्रकाशित हुए। आपको **डी आर डी ओ वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार-2002** से सम्मानित किया गया। आप वर्ष 2003 में **आत्मनिर्भरता में उत्कृष्टता के लिए अग्नि पुरस्कार** से सम्मानित (शक्ति परियोजना) टीम के सदस्य थे। आप नवम्बर 2006 में केयर के निदेशक के पद के लिए पदोन्नत किए गए एवं जुलाई, 2009 में आपको उत्कृष्ट वैज्ञानिक पदोन्नत किया गया।

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, दिल्ली



प्रो. मानस कुमार मण्डल, निदेशक, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली, का जन्म 01 नवम्बर, 1956 में हुआ, जिन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1979 एवं 1984 में क्रमशः स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की। उन्होंने वर्ष 1986-87 में डेलावेयर यूनिवर्सिटी (फुलब्राइट फ़ैलो), यू एस ए एवं वॉटरलू यूनिवर्सिटी (शास्त्री एवं एन एस ई आर सी फ़ैलो), कनाडा से 1993-94 में अपना पोस्ट डॉक्टरल शोध कार्य पूर्ण किया।

डॉ मण्डल आई आई टी, खड़गपुर में ह्यूमेनिटीज़ एवं सोशल साइंस विभाग में मनोविज्ञान के प्रोफेसर के तौर पर कार्य कर चुके हैं। वे 1997 में क्यूशू यूनिवर्सिटी, जापान के विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे हैं। वर्ष 2003 के दौरान वे हावर्ड यूनिवर्सिटी, यू एस ए के फुलब्राइट विजिटिंग लेक्चरर रहे हैं। उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न शोध फ़ैलोशिप एवं वैज्ञानिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जैसे कि **इन्टरनेशनल साइंटिफिक एक्सचेंज अवार्ड (कनाडा)**, **फुलब्राइट फ़ैलोशिप (यू एस ए)** **शास्त्री फ़ैलोशिप (कनाडा)**, **सेमोर केटी ग्रांट (यू एस ए)**, **करियर अवार्ड (भारत)**, **यंग साइंटिस्ट अवार्ड (भारत)**, **डी आर डी ओ स्पिन ऑफ टेक्नोलॉजी अवार्ड 2007** आदि। उनके द्वारा सात किताबें एवं 100 शोध पत्र, जिसमें 78 अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित शोध पत्र शामिल हैं प्रकाशित हुए हैं। उनके शोध कार्य 150 अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रों एवं पुस्तकों में उद्धरित किए जा चुके हैं।

डॉ मण्डल कॉग्निशन एवं एक्सपेरिमेंटल न्यूरो साइकोलॉजी के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखते हैं। सशस्त्र सेनाओं एवं लोक प्राधिकरणों में चयन प्रणाली के विकास में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। न्यूरोसाइकोलॉजी के क्षेत्र में उनकी योग्यताओं से डी आई पी आर को ह्यूमन इंजीनियरिंग कार्यक्रम आरम्भ करने में मदद मिली है। स्ट्रेटजिक बिहेवियर एनालिसिस क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है। वर्ष 2005 में डॉ मण्डल और उनकी टीम को कम्प्यूटराइज्ड पायलट सेलेक्शन सिस्टम के विकास में योगदान के लिए **अग्नि अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन सेल्फ रिलायन्स** से सम्मानित किया गया। सेना मनोविज्ञान में उनके महत्वपूर्ण योगदान पर वर्ष 2006 में प्रधानमंत्री द्वारा उन्हें वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना, बेंगलूरु



श्री टी मोहन राव वर्ष 1971 में डी आर डी ओ में शामिल हुए एवं विभिन्न क्षमताओं में आर एण्ड डी (ई), पुणे ; सी आर आई, डी टी डी एण्ड पी (ए आई आर), कोरापट तथा गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु में कार्य किया। आपने कावेरी इंजन के लिए उप-प्रणालियों को सफलतापूर्वक विकसित किया एवं इसके साथ ही एयरो गैस टरबाइन इंजन एवं परियोजना प्रबंधन के परीक्षण में भी स्वयं को सक्रिय रखा। आप मैकेनिकल इंजीनियरिंग में जे एन टी यू हैदराबाद से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं एवं आप भारतीय वैमानिकी समिति के सदस्य हैं। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय शोध वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार पत्रों में उनके कई शोध प्रकाशित हुए हैं। आपको एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी में उत्कृष्ट कार्य के लिए डॉ बी एम घाटे राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है एवं ऑल इंडिया मैनुफैक्चर्स आर्गनाइजेशन की ओर से अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस से नवाजा गया है।

यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना, देहरादून



श्री एसएस सुन्दरम का जन्म 1951 में हुआ। आपने मद्रास विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में स्नातक किया। आप आन्ध्रा विश्वविद्यालय के एम एस सी (टेक) इन अप्लाइड फिजिक्स के गोल्ड मेडलिस्ट रहे हैं। आपने एक वर्ष तक सी एस आई आर रिसर्च फ़ैलो के तौर पर आयनोस्फीयर का अध्ययन कार्य किया एवं कई शोध पत्र प्रकाशित किए। आपने जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय से अपनी एम टेक डिग्री एडवांस्ड इलैक्ट्रानिक्स में प्राप्त की।

वर्ष 1976 के दौरान एस एस ए के तौर पर डी आर डी ओ के रक्षा इलैक्ट्रानिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून से जुड़े। बाद में आपका चयन इंडियन इंजिनियरिंग सर्विसेज में हो गया और आप इम्फाल, सिलचर,

पटना आदि के आकाशवाणी व दूरदर्शन स्टूडियो के इंस्टालेशन एवं कमीशनिंग का कार्य पूर्ण किया। सन् 1981 में आप पुनः डी आर डी ओ के रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद से जुड़े। यहां आपने कम्प्यूनिकेशन एस डब्ल्यू सिस्टम कोड के डिजाइन पर कार्य किया, जिसमें शामिल थे—टी आई एस आई आई, गोल्फ मार्क-II, स्ट्राबेरी, चेरी, गारनेट, सुजाव, सुजीत, बॉक्स आदि। बाद में आपने सेना के लिए कम्प्यूनिकेशन एवं रडार इलैक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम पर आधारित “संयुक्त कार्यक्रम” के कार्यक्रम निदेशक का जिम्मा उठाया। संयुक्त डी आर डी ओ की एक बड़ी परियोजना थी, जिसका बजट 1300 करोड़ था। आपके नेतृत्व में प्रणाली का सेवाओं में सफलतापूर्वक अधिष्ठापन हुआ।

श्री सुन्दरम 01 अप्रैल 2007 से यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून के निदेशक नियुक्त हुए। निदेशक, आई आर डी ई के तौर पर आपने भारतीय सैनिकों को रात्रिकालीन लड़ाकू क्षमताओं को बढ़ाने पर जोर दिया, जिसमें नई पीढ़ी के इलैक्ट्रो-ऑप्टिकल फायर कंट्रोल एवं सर्विलेंस सिस्टम के जरिए नई प्रौद्योगिकी एवं विकास के माध्यम से सेवारत उपकरणों को उच्चकोटि का बनाया जाना शामिल था। आपके निदेशक, आई आर डी ई के तौर पर दो वर्षों के सीमित कार्यकाल में आई आर डी ई की तीन प्रमुख प्रणालियां उपयोगकर्ताओं द्वारा सेवाओं में लाने के लिए स्वीकार की गई हैं और कुछ स्वीकृति के लिए विचाराधीन हैं। आपको वर्ष 2005 में टीम लीडर के तौर पर डी आर डी ओ अवार्ड फॉर एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया। आप आई ई टी ई एवं ऑप्टिकल एण्ड इन्स्ट्रूमेंट सोसाइटीज ऑफ इंडिया के फेलो हैं।

एकीकृत परीक्षण परिसर, चांदीपुर



श्री एस पी दास, निदेशक, एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर का जन्म 01 जनवरी, 1955 को हुआ। आपने इलैक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूनिकेशन में बी टेक (आनर्स) की डिग्री आई आई टी, खड़गपुर से 1977 में प्राप्त की। आप डी आर डी एल से नवम्बर 1977 में एस एस ओ-II (एड-होक) के तौर पर जुड़े एवं जुलाई 2001 में वैज्ञानिक ‘जी’ के स्तर पर सुशोभित हुए। जनवरी 2002 से फरवरी 2007 तक वे अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद के सह-निदेशक रहे। आपने मार्च 2007 में आई टी आर के निदेशक का पद संभाला। आई टी आर, चांदीपुर के निदेशक के तौर पर आपने 102 उड़ानों के परीक्षण सफलता से संचालित किए एवं राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के रॉकेट, मिसाइल व हथियार प्रणालियों का मूल्यांकन मिशन की आवश्यकताओं एवं डी आर डी ओ, थल सेना, नौसेना एवं वायु सेना के कार्यक्रमों के उद्देश्यों के अनुरूप किया।

उड़ान परीक्षण चांदीपुर के विविध लॉच कॉम्प्लेक्सों द्वारा संचालित किए गए, इसके अतिरिक्त ये परीक्षण धमरा के वीलर द्वीप के लॉच कॉम्प्लेक्स, आई एन एस कलिंगा वाईजेग एवं अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में हुए। इन मिशनों के लिए वृहत यंत्रीकरण का प्रयोग किया गया। मिशनों का परिदृश्य एवं आवश्यकताएं उड़ान एवं मिशन की विविधता के आधार पर भिन्न-भिन्न होती हैं, जो कि उसकी जटिलता, खासतौर पर मल्टी मिसाइल एवं मल्टी-टार्गेट, लम्बी एवं मध्यम दूरी पर निर्भर करता है। वायु से वायु मिशन एक वास्तविक चुनौती होती है जो उपकरणों के दायरे एवं परीक्षण सुविधाओं पर निर्भर करता है।

आपको 2006 में टीम सदस्य के तौर पर कार्यक्रम ए डी के लिए डी आर डी ओ अवार्ड और पाथब्रेकिंग रिसर्च/आउटस्टैंडिंग टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। टीम सदस्य के तौर पर 2007 में डी आर डी ओ अवार्ड फॉर पाथ ब्रेकिंग रिसर्च, प्रोग्राम बी-05 (के-15) के लिए डी आर डी ओ उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि



श्री अनन्थ नारायण का जन्म 1953 में हुआ। आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी) मद्रास, चेन्नई से 1975 में इलैक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बी टेक की डिग्री प्राप्त की एवं भारतीय विज्ञान संस्थान (आई आई एस), बैंगलूरु से 1985 में इलैक्ट्रॉनिक्स में एम टेक की डिग्री हासिल की। वे आई आई एस के गोल्ड मेडलिस्ट (एस वी सी आय्या गोल्ड मेडल) रहे हैं। आप

नेशनल डिफेंस कॉलेज, नई दिल्ली के भी पूर्व छात्र रहे हैं, जहाँ आपने 2003 के दौरान नेशनल सिक्वोरिटी एण्ड स्ट्रैटिजी पर एक वर्ष का प्रशिक्षण लिया। आप 1975 में डी आर डी ओ से बतौर जूनियर साइंटिफिक ऑफिसर, रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद के तौर पर जुड़े। उसके पश्चात आपका स्थानान्तरण 1978 में नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि में हुआ। आप 01 जनवरी 2007 को एन पी ओ एल के निदेशक नियुक्त हुए। आपने भारतीय नौसेना के लिए विविध सोनार सिस्टम के विकास में योगदान दिया। आप फ्रिगेट सोनार परियोजना ए पी एस ओ एच की डेवलपमेंट टीम के सदस्य थे। आप ए पी एस ओ एच सिम्यूलेटर परियोजना के टीम लीडर थे, जो कि 1985 में ए एस डब्ल्यू स्कूल नेवल बेस में स्थापित हुई थी। 1993-98 के दौरान आप भारत के पहले देशज रूप से विकसित समुद्री सोनार परियोजना, पंचेन्द्रिय के परियोजना निदेशक बनाए गए, आपने इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का मार्ग खोला।

निदेशक (सिस्टम) के तौर पर आप हम्सा फ्रिगेट सोनार, टैडपोल सोनोबॉयज एवं ऊषुस सब मेरीन सोनार के उत्पादन एवं अधिष्ठापन को सुचारु रखने में सक्रिय थे। एन पी ओ एल के निदेशक के तौर पर आपने सीमित समय में न्यू जनरेशन फ्रिगेट सोनार हम्सा एन जी की उत्पादनशीलता को सुचारु किया। उन्होंने प्रयोगशाला में टॉड ऐरें एवं वायु सृजित सोनार सिस्टम पर विकास कार्य को गति प्रदान की। आप रक्षा प्रौद्योगिकी के व्यवसायीकरण, उद्योग इंटरएक्शन एवं मानव संसाधन विकास में बहुत दिलचस्पी रखते हैं। उन्हें सन 1995 में नेवल प्रणाली के विकास के लिए डी आर डी ओ वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आप अल्ट्रासोनिक सोसाइटी ऑफ इलैक्ट्रानिक्स एण्ड टेली कम्यूनिकेशन इंजीनियर्स, भारत के फेलो हैं।

अनुसंधान केंद्र इमारत, हैदराबाद



श्री वी एल एल नरसिम्हा राव का जन्म अक्टूबर 1949 में हुआ। उन्होंने 1971 में आन्धा विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास से 1974 में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। मिसाइल प्रौद्योगिकी में देश की शोध एवं अनुसंधान आवश्यकताओं का स्पष्ट अनुभव करते हुए, आपने डी आर डी ओ में करियर चुना और 1975 में रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद से जुड़े। आपने लीक्विड प्रोपल्शन, लिक्विड प्रोपेलेंट रॉकेट इंजिन एण्ड सिस्टम के क्षेत्र में योगदान दिया जो कि पृथ्वी मिसाइल में उपयोग किया जा रहा है एवं सेना में अधिष्ठापित हो चुका है। आपने बाद में अग्नि कार्यक्रम के लिए कार्य किया एवं सतह से सतह को मार करने वाले लम्बी दूरी के मिसाइल के विकास में शामिल हुए। वर्तमान में वे बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस सिस्टम के लिए परियोजना निदेशक के तौर पर कार्य कर रहे हैं। आपने वर्ष 2001 में फ्लाइंग वेहिकल अग्नि-2 (ए 2) के डिजाइन एवं विकास के लिए वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आप कई व्यावसायिक संगठनों जैसे एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के सक्रिय सदस्य हैं।

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह, दिल्ली



05 जुलाई, 1952 को जन्मे डॉ पी के सक्सेना ने अपनी एम एस सी (मैथमेटिक्स), 1971 में कानपुर विश्वविद्यालय से, एवं पी एच डी (एलजेब्रा) सन 1978 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर से प्राप्त की। बाद में उन्होंने कुछ समय के लिए नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (पूर्व में रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज), सिल्वर (1979-80) में गणित प्रवक्ता के रूप में कार्य किया। वे सन 1981 में साइंटिफिक एनालिसिस ग्रुप (एस ए जी), डी आर डी ओ में बतौर वैज्ञानिक 'सी' शामिल हुए एवं सन 2002 में वैज्ञानिक 'जी' बने।

आपके रुचिगत क्षेत्रों में शामिल हैं—एलजेब्रा, क्रिस्टोलॉजी, फज्जी लॉजिक, आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क एवं स्पीच टेक्नोलॉजी। आपके राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं एवं संगोष्ठी कार्यवाहियों में 59 शोध-पत्र प्रकाशित हैं। आप मूल शोध एवं कुछ महत्वपूर्ण शोध एवं विकास परियोजनाओं के परियोजना प्रमुख रहे हैं। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली एवं जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता के कई बी

ई एवं एम ई छात्रों का मार्गदर्शन किया है एवं वैज्ञानिकों के पी एच डी कार्य का पर्यवेक्षण किया है। प्रौद्योगिकी प्रबंधन गतिविधियों के अतिरिक्त वे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजन, शोध पत्रिकाओं के लिए शोध पत्रों की तकनीकी समीक्षाओं एवं विभिन्न फोरम, डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं व शैक्षिक संस्थानों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। उन्हें फज़्ज़ी लॉजिक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। क्रिप्टोग्राफी पर लिखी उनकी हिन्दी में पुस्तक को डी आर डी ओ द्वारा 1997 में प्रथम पुरस्कार से नवाज़ा गया।

वैज्ञानिक जी में पदोन्नति

रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद



14 अगस्त 1953 को जन्में श्री रामा राव रयानी ने आंध्रा विश्वविद्यालय से 1975 में इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूनिकेशन इंजीनियरिंग में स्नातक एवं 1978 में जवाहर लाल नेहरू टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (जे एन टी यू) से इंस्ट्रुमेंटेशन एण्ड कंट्रोल सिस्टम में एम टेक की डिग्री हासिल की। वे सितम्बर 1978 में डिफेंस इलेक्ट्रॉनिक्स रिसर्च लैब्ररटरी (डी आर डी एल), हैदराबाद से जुड़े। आपने सतह से वायु में मार करने वाली मिसाइल परियोजना त्रिशूल के लिए कमान्ड जनरेशन सिस्टम (सी जी एस) के डिज़ाइन एवं विकास के साथ अपना करियर आरम्भ किया।

त्रिशूल परीक्षण उड़ानों में अपनी सफलता सिद्ध कर चुका है। वे डायरेक्शन फाइंडिंग सिस्टम के विकास एवं हेलिबॉर्न ई एस एम परियोजना-‘सफायर’ की उप प्रणाली के प्रदर्शन के कार्यों के प्रभारी हैं।

आपने संग्रह कार्यक्रम एयरबॉर्न सिस्टम के परियोजना प्रबंधन एवं परियोजना निदेशक के उच्च प्रभारों का जिम्मा लिया। आपके नेतृत्व में तीन एयरबॉर्न परियोजनाओं, जो अपने क्षेत्रों में सफल साबित हुई हैं, में शामिल हैं:— चेतक एवं कमोव हेलीकाप्टर के लिए एक हेलीबॉर्न ई एस एम सिस्टम, डॉर्नियर एयरक्राफ्ट के लिए एक एयरबॉर्न ई एस एम सिस्टम-ईगल एवं टी यू 142 एयरक्राफ्ट के लिए एक अति सटीक एयरबॉर्न सिस्टम होमी। 15 काइट, 12 ईगल एवं 5 होमी सिस्टम उत्पादनशील किए गए, सेवाओं में अधिष्ठापित किए गए एवं नौसेना द्वारा प्रयोग किए गए। इन प्रणालियों की संतोषजनक क्रियाशीलता के आधार पर नौसेना द्वारा 47 काइट एवं 8 ईगल के लिए अतिरिक्त आदेश दिए गए हैं।

आपने नौसेना के कार्मिक प्रशिक्षण के मद्देनज़र एक विक्रेता के जरिए पी सी आधारित मल्टीमीडिया के विकास के लिए उन्होंने श्रेणी को संरचनाबद्ध किया एवं दस्तावेजों का उत्पादन किया। ये ट्यूटर मॉड्यूलस नौसेना द्वारा लाभ के साथ उपयोग में लाए जा रहे हैं। आपने एयरबॉर्न परियोजनाओं के डिज़ाइन फेज़ से लेकर इंडक्शन फेज़ तक टीम का कुशलता से नेतृत्व किया एवं संग्रह कार्यक्रम के सफल निष्पादन की मुख्य जिम्मेदारियों के प्रभारी बने। उनके योगदान को मान्यता देने के लिए एवं संग्रह कार्यक्रम में उनकी सेवाओं के लिए उन्हें डी आर डी ओ परफॉर्मन्स एक्सीलेंस अवार्ड से 2002 में सम्मानित किया गया।

अनुसंधान केंद्र इमारत, हैदराबाद

श्री एल सोहन कुमार ने सन् 1984 में एन आई टी, वारंगल से बी टेक (मैकेनिकल) एवं सन् 1990 में एम टेक कंट्रोल सिस्टम, आई आई टी, मुम्बई से प्राप्त किया। वे 1984 में वैज्ञानिक बी के तौर पर आर एण्ड डी ई (ई), पुणे से जुड़े। यहां कार्य करते हुए उन्होंने मिसाइल लॉन्चर्स के लिए इलेक्ट्रोहाइड्रोलिक एक्चुएशन सिस्टम के क्षेत्र में योगदान दिया। वे 1990 में रिसर्च सेंटर इमारत, हैदराबाद से जुड़े एवं विभिन्न मिसाइल अनुप्रयोगों के लिए इलेक्ट्रोहाइड्रोलिक, इलेक्ट्रोमैकेनिकल, इलेक्ट्रोमैट्रिक कन्ट्रोल ऑक्शन सिस्टम के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में कई शोध-पत्र प्रकाशित किए हैं। वे एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इण्डिया एवं फ्लूइड पावर सोसाइटी ऑफ इण्डिया के सदस्य हैं। अग्नि अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस इन सैल्फ़ रिलायंस 2003, अग्नि अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस इन सैल्फ़ रिलायंस—2005 एवं डी आर डी ओ पाथ ब्रेकिंग रिसर्च अवार्ड—2007 से उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र, बैंगलूरु



लेफ्टिनेंट जनरल जे पी सिंह, अति विशिष्ट सेवा मेडल, डी सी आई डी एस (पी पी एवं एफ डी), विभिन्न परियोजनाओं का निरीक्षण करते हुए।

13 जुलाई 2009 : लेफ्टिनेंट जनरल जे पी सिंह, अति विशिष्ट सेवा मेडल, डी सी आई डी एस (पी पी एवं एफ डी)।

16 जुलाई 2009 : लेफ्टिनेंट जनरल डी एस चौहान, अति विशिष्ट सेवा मेडल, जी ओ सी 10 कोर।

24 जून 2009 : श्री पी एम हबलीकर, अपर सचिव, कैबिनेट सचिवालय।

वायुवाहित प्रणाली केंद्र, बैंगलूरु

17 जुलाई 2009 : एयर वाइस मार्शल दलजीत सिंह, विशिष्ट मेडल, ए सी ए एस ऑप्शन।

22 जुलाई 2009 : एयर वाइस मार्शल आर के शर्मा, विशिष्ट मेडल, ए सी ए एस योजना।



एयर वाइस मार्शल आर के शर्मा, विशिष्ट मेडल, ए सी ए एस कैब्स की गतिविधियों में गहरी रुचि रखते हुए।

29 जुलाई 2009 : एयर मार्शल एन वी त्यागी, परम विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट मेडल, डी सी ए एस।

इलेक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना, बैंगलूरु



एडमिरल निर्मल वर्मा, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, ए डी सी को एल आर डी की गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

06 अगस्त 2009 : परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, ए डी सी, फ्लैग ऑफिसर, कमांडिंग इन चीफ, पूर्वी नौसेना कमांड, नौसेना प्रमुख अभिकल्पन।

मुख्य सम्पादक डॉ अ ल मूर्ति	सह मुख्य सम्पादक शशी त्यागी	सम्पादक सुमति शर्मा	सह सम्पादक फूलदीप कुमार	सम्पादकीय सहायक अशोक कुमार	मुद्रण एस के गुप्ता हंस कुमार	विपणन एम जी शर्मा आर पी सिंह
--------------------------------	--------------------------------	------------------------	----------------------------	-------------------------------	-------------------------------------	------------------------------------

डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली.110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23902500 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in